IJAER/ March-April 2024/Volume-13/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन तथा उनके शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन

➢ पूनम रानी, शोधकर्ती, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
➢ डॉ0 विकेश कामरा, प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सार–
स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन मानव के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायक हैं। उन्होंने बताया कि जीवन एक संघर्ष है। इस संघर्ष में केवल समर्थ ही विजय होती हैं तथा असमर्थ नष्ट हो जाता है। अतः विजय प्राप्त करके जीवित रहने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की प्रत्येक चुनौती के साथ डटकर संघर्ष करना चाहिए। स्वामी जी तत्कालीन भारतीय जनता के कष्टों को देखकर बड़ा दुख होता था। एक दिन उन्होंने कहा आज हम लोग दीन हीन हो गए हैं। हम प्रत्येक कार्य को दूसरों के डर से करते हैं। ऐसा लगता है कि हमने शत्रुओं के देश में जन्म लिया हैं, मित्रों के देश में नहीं। स्वामी विवेकानंद की नस नस में भारतीय तथा आध्यात्मिकता कूट–कूट कर भरी हुई थी। अतः उनकी शिक्षा दर्शन का आधार भी भारतीय वेदांत तथा उपनिषद ही रहे। वे कहते थे कि प्रत्येक प्राणी में आत्मा विराजमान है। इस आत्मा को पहचानना ही धर्म है। स्वामी जी का अटल विश्वास था कि सभी प्रकार का सामान्य तथा आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य के मन में ही है। स्वामी जी का कहना था कि कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को नहीं सिखाता बल्कि वो खुद सीखता है। बाहरी शिक्षक तो केवल सुझाव प्रस्तुत करता है। जिससे भीतरी शिक्षक को समझाने और सिखाने के लिए प्रेरणा मिल जाती हैं।
स्वामी जी ने कहा है कि हम लोग उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षाएं पास कर ली हो तथा जो अच्छे भाषण दे सकता है पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं कर सकती, जो चरित्र निर्माण नहीं कर सकती, जो समाज सेवक की भावना को विकसित नहीं कर ऐसी शिक्षा का क्या लाभ है।

प्रस्तावना–

स्वामी विवेकानन्द का जन्म मकर संक्रान्ति के दिन 12 जनवरी, 1863 को क्षत्रिय परिवार में बंगाल राज्य के कलकत्ता शहर में हुआ था। इनके पिता विश्वनाथ दत्त एक सुसम्पन्न एवं प्रतिष्ठित वकील थे। इनकी माता भुवनेश्वरी देवी एक पवित्र एवं विदुशी व धार्मिक महिला थी। इनका बचपन का नाम नरेन्द्र दत्त था। ये अपने माता–पिता के छटवे तथा जीवित रहने वाले पुत्रों में प्रथम थे। इसलिये ये अपने परिवार में सबके प्रिय थे। इनकी माता ने इन्हें बचपन में ही इन्हें रामायण महाभारत तथा पुराणों की कथा सुनने पर बल दिया। अतः इस पारिवारिक धार्मिक वातावरण ने इनको आरम्भ से ही गम्भीर, चिन्तनशील, धर्मनिष्ठ और कर्मनिष्ठ बना दिया। नरेन्द्र जी की बुद्धि बड़ी कुषाग्र थी। इन्होंने साहित्य इतिहास, कनिता और दर्शन का गहरा अध्ययन किया। इसके साथ–साथ संगीत वाद्य–यन्त्र, अश्वारोहण, व्यायाम और तैराकों में भी ये कुशल थे। हरबर्ट स्नेन्सर तथा जान स्टुअर्ट मिल उनके प्रिय दार्शनिक थे तथा वर्डसवर्थ एवं शैले उनके प्रिय कवि। नरेन्द्र नाथ अपने आचरण में बड़े संयमी थे। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वे प्रार्थना, उपासना और ध्यान में लीन रहते थे। अतः ये विद्यार्थी जीवन में अपने सुन्दर शरीर, प्रखर प्रतिभा तथा बातचीत के अलौकिक ढंग

के कारण लोकप्रिय बन गये। ये ज्ञान के प्रकाश में मंडित, आध्यात्मिक तेज से प्रदीप्त चुम्बकीय आकर्षण से युक्त, अत्यन्त प्रभावी व्यक्तित्व के थे। उनके प्रधानाचार्य मिस्टर हैस्ट्री ने उनके विषय में कहा था–"नरेन्द्रनाथ दत्त वस्तुतः प्रतिभाशाली है। मैने विश्व के विभिन्न देशों की यात्रायें की हैं किन्तु किशोरावस्था में ही इसके समान योग्य एवं महान क्षमताओं वाला युवक मुझे जर्मन विश्वविद्यालयों में भी नहीं मिला। यह निश्चित ही जीवन में यश प्राप्त करेगा। एक दिन प्राचार्य हैस्ट्री ने उनका परिचय स्वामी रामकृष्ण परमहंस से कराया। वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस से इतना अधिक प्रभावित हुए कि वे उनके भक्त बन गये। उनके सम्पर्क में नरेन्द्र जी छः वर्ष रहे और उनसे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करके नरेन्द्र नाथ से विवेकानन्द बन गये। अगस्त 1886 में स्वामी रामकृष्ण परमहंस का स्वर्गवास हो गया। स्वर्ग सिधारने से चार दिन पूर्व अपना उत्तराधिकार उनको देते हुए रामकृष्ण परमहंस ने कहा था "आज अपना सब कुछ तुम्हें देकर मैं रंक बन गया हूँ। मैंने योग द्वारा जिस शक्ति को तुम्हारे अन्दर प्रविष्ट किया है उससे तुम अपने जीवन में महान कार्य करोगे। अपने इस कार्य को पूर्ण करने के बाद ही तुम वहाँ जाओगे जहाँ से तुम आये हो।" अपने गुरू के उपदेशों और विचारों के प्रचार के लिए स्वामी विवेकानन्द ने विश्व भ्रमण किया। स्वामी विवेकानन्द दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए 24–25 दिसम्बर 1892 को कन्याकुमारी पहुँचे। इन्होंने यहाँ के मन्दिर में देवी कन्याकुमारी के दर्शन किये और समुद्र की एक चट्टान पर तपस्या में लीन हो गये। कहा जाता है कि इन्हें यहाँ दिव्य अनुभूति हुई और यही इन्होंने मातृ–भूमि की सेवा में लगने की प्रतिज्ञा की।

1893 में स्वामी विवेकानन्द विश्व भ्रमण पर निकल पड़े। 11 सितम्बर 1893 में स्वामी जी ने अमेरिका के शिकागो नगर में सर्वधर्म सम्मेलन में भाग लिया। वहाँ पर रोमन कैथोलिक ईसाइयों ने अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए इस धर्म सभा का आयोजन किया था। स्वामी जी ने वहाँ पर अपना भाषण "अमेरिकावासी भाइयों व बहनों" कहकर शुरू किया। इन शब्दों को सुनकर सभी श्रोताओं पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। डॉ0 एम0 लक्ष्मीकुमारी के शब्दों में–स्वभावतः स्वामी जी के वक्तव्य की सत्यता, ज्ञान की गहराई, कल्पना की व्यापकता उनके शब्दों की विरल प्रमाणिकता से परिपूर्ण करती हुई आत्मानुभूति की सघनता, और इन सबसे ऊपर नेत्रों में तेजोमय सौन्दर्य से युक्त उनका सर्वाधिक मन–मोहन व्यक्तित्व तथा घण्टियों की तरह बजती मधुर आवाज सबने समन्वित होकर उन्हें उस धर्म सभा का केन्द्रीय पुरूष बना दिया जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता था। उन्होंनें तुरन्त ही वहाँ अपने लिए एक विशिष्ट स्थान बना लिया। विश्व धर्म संसद के श्रोताओं मात्र के मध्य ही नहीं बल्कि अमेरिका के विशेष महत्वपूर्ण महानुभावों में तथा इसके बाद इंग्लैण्ड तथा यूरोप में भी। उनकी सार्वजनिक घोषणा ने एक सच्चे विश्व बन्धुत्व की लहर उत्पन्न कर दी। जिसने एक अद्वितीय एवं व्यापक विचार के साथ अपने शक्तिशाली सम्मोहन में सैकड़ों पुरूषों एवं महिलाओं को बांध लिया। पश्चिम के समाज में उनके प्रवेश से भारत की समस्याओं के प्रति सहानुभूति के द्वार खुल गये और हमारे अपने देश में नवीन आत्मगौरव एवं विकास का नया सूत्रपात हुआ जिसका प्रभाव देश के स्वतन्त्रता संघर्ष पर भी पड़ा। वे सनातन धर्म को वैज्ञानिक तार्किकता के तेज प्रकाश से देशवासियों के सम्मुख लाये और अपने ज्ञान से लोगों का मार्गदर्शन किया।

विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य–

पुर्णत्व को प्राप्त करने का उद्देश्य

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का प्रथम उद्देश्य अंतर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना है। उनके अनुसार लौकिक तथा आध्यात्मिक सभी ज्ञान मनुष्य के मन में पहले से ही विद्यमान होता है।

शारीरिक एवं मानसिक विकास का उद्देश्य

विवेकानंद जी के अनुसार शिक्षा का दूसरा उद्देश्य बाला का शारीरिक एवं मानसिक विकास करना है। उन्होंने शारीरिक उद्देश्य पर इसलिए बल दिया जिससे आज के बालक भविष्य में निर्भीक एवं बलवान योद्धा के रूप

में गीता का अध्ययन करके देश की उन्नति कर सकें। मानसिक उद्देश्य पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि हमें ऐसे शिक्षा की आवश्यकता है जिसे प्राप्त करके मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य

स्वामी जी का विश्वास था कि किसी देश के महानता केवल उनके संसदीय कामों से नहीं होती अपितु उसके नागरिकों की महानता से होती है। पर नागरिकों को महान बनाने के लिए उनका नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास परम आवश्यक है।

चरित्र निर्माण का उद्देश्य

विवेकानंद जी ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य माना। इसके लिए उन्होंने ब्रह्माचार्य पालन पर बल दिया और बताया कि ब्रह्माचार्य के द्वारा मनुष्य मैं बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियां विकसित होगी तथा वह मन वचन और कर्म से पवित्र बन जाएंगे।

आत्मविश्वास, श्रद्धा एवं आत्मत्याग की भावना

स्वामी जी ने आजीवन इस बात पर बल दिया कि अपने ऊपर विश्वास रखना, श्रद्धा तथा आत्मत्याग की भावना को विकसित करना शिक्षा का महत्व पूर्ण उद्देश्य है। उन्होंने लिखा उठो जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक की चरम उद्देश्य की प्राप्ति ना हो जाए।

धार्मिक विकास का उद्देश्य

स्वामी जी ने धार्मिक विकास को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य माना। वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति उस सत्य अथवा धर्म को मालूम कर सके जो उनके अंदर दिया हुआ है। उसके लिए उन्होंने मन तथा हृदय के प्रशिक्षण पर बल दिया। और बताया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसे प्राप्त करके बालक अपने जीवन को पवित्र बना सकें।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार पाठ्यक्रम

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, पाठ्यक्रम को व्यापक और संपूर्णतापूर्वक विकसित करना चाहिए। उन्होंने यह मान्यता थी कि पाठ्यक्रम को सिर्फ तकनीकी ज्ञान के सीमित सत्रों पर ही सीमित नहीं रखना चाहिए। निम्नलिखित पाठ्यक्रम के तत्वों को विवेकानंद ने महत्वपूर्ण माना–

- शारीरिक शिक्षारू शिक्षा का पहला महत्वपूर्ण तत्व शारीरिक शिक्षा है। उन्हें यह मान्यता थी कि एक स्वस्थ शरीर मन के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।
- मनोवैज्ञानिक शिक्षारू विवेकानंद ने मनोवैज्ञानिक शिक्षा को भी महत्व दिया। उन्हें यह मान्यता थी कि छात्रों को अपनी मनोबल को पहचानने, संयमित करने और नियंत्रित करने की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
- आध्यात्मिक शिक्षारू स्वामी विवेकानंद ने आध्यात्मिक शिक्षा को महत्वपूर्ण तत्व माना। उन्हें यह मान्यता थी कि छात्रों को आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की प्रशिक्षण देना चाहिए।
- व्यावसायिक शिक्षारू स्वामी विवेकानंद ने छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा की भी महत्वता बताई। उन्हें यह मान्यता थी कि छात्रों को अपने कौशल और क्षमताओं के विकास के लिए उच्चतम शिक्षा और तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है।

ये तत्व पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण हिस्से हैं, जिन्हें स्वामी विवेकानंद ने व्यक्तिगत और समाजिक विकास के लिए आवश्यक माना।

शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में पाठ्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि आध्यात्मिक विकास जीवन का लक्ष्य है और इसे प्राप्त करने में शिक्षा को महत्वपूर्ण योगदान देना है, तो निश्चित रूप से ऐसे पाठ्यक्रम

की आवश्यकता होती है जो धार्मिक ग्रंथों, पुराणों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्र आदि को सम्मिलित करते हैं। स्वामीजी यह भी कहते थे कि केवल आध्यात्मिक नहीं, भौतिक विकास भी होना चाहिए।
इसलिए, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि विषयों को उचित स्थान देने की आवश्यकता होती है। स्वामीजी छात्रों को शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़ देखना चाहते थे, इसलिए पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा को महत्व देने के पक्षधर थे। स्वामीजी विदेशी भाषा की शिक्षा के पक्षधर थे, लेकिन मातृभाषा को हमेशा प्राथमिकता देने की आवश्यकता को सदैव महसूस करते थे

जीवन दर्शन–

स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन मानव जीवन के लिए अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायक है। उन्होंने बताया कि जीवन एक संघर्ष है। इस संघर्ष में केवल समर्थ की विजय होती है तथा असमर्थ का विनाश हो जाता है। अतः विजय प्राप्त करके जीवित रहने के लिए व्यक्ति को जीवन की प्रत्येक चुनौती के साथ डटकर संघर्ष करना चाहिए। स्वामी जी को तात्कालिक जनता के कष्टों को देख बड़ा दुख होता था। एक दिन उन्होंने कहा–"आज हम लोग दीन–हीन हो गये हैं, हम प्रत्येक कार्य को दूसरों से डरकर करते है, डरते हुए बोलते हैं, डरते हुए सोचते हैं। ऐसा लगता है कि हमने शत्रुओं के देश में जन्म लिया है। मित्रों के नहीं।" स्वामी जी के जीवन दर्शन के अंगों का विवरण निम्न रूप से दिया जा सकता है।

- वेदान्त दर्शन में विश्वास
- मनुष्य की महत्ता में विश्वास
- आत्मानुभूति में विश्वास
- आध्यात्मिकता में विश्वास
- निर्भीकता, सत्यता और स्वतन्त्रता में विश्वास
- मानव सेवा की भावना में विश्वास

शिक्षा दर्शन–

स्वामी जी अपने समय की, मैकाले द्वारा प्रचारित अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के विरोधी थे। उनके अनुसार यह शिक्षा मनुष्य निर्माण करने वाली शिक्षा नहीं है क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य मात्र बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। स्वामी जी भारत में ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे व्यक्ति चरित्रवान बने। साथ–साथ आत्मनिर्भर भी बने। उन्हीं के शब्दों में–"हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क को शक्ति बढ़ती, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

स्वामी जी सैद्धान्तिक शिक्षा की तुलना में व्यावहारिक शिक्षा पर बल देते थे। उन्हीं के शब्दों में "तुम्हें कार्य के सब क्षेत्रों में व्यावहारिक होना पड़ेगा, सिद्धान्तों के ढेरों ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।" स्वामी जी के शिक्षा–दर्शन सम्बन्धी आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं–

- शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास हो सके।
- शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति के चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो तथा व्यक्ति आत्मनिर्भर बने।
- बालकों के समान ही बालिकाओं को भी शिक्षा दी जानी चाहिए।
- धार्मिक शिक्षा पुस्तकों से नहीं वरन् व्यवहार, आचरण एवं संस्कारों के माध्यम से दी जानी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विषय रखने चाहिए।

- शिक्षा गुरूगृह में ही प्राप्त की जा सकती है।
- शिक्षक एवं छात्र में महिमामय एवं गरिमामय सम्बन्ध होने चाहिए।
- जन साधारण को शिक्षित करने का प्रयास करना चाहिए।
- नारी शिक्षा का केन्द्र धर्म होना चाहिए।
- देश को औद्योगिक प्रगति के लिए प्राविधिक शिक्षा का विस्तार किया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय एवं मानवीय शिक्षा परिवार से प्रारम्भ होनी चाहिए।
- केवल पुस्तकों का अध्ययन ही शिक्षा नहीं है।
- ज्ञान व्यक्ति के मन में विद्यमान होता है। वह स्वयं ही सीखता है।
- शिक्षक एक मित्र, दार्शनिक तथा पर्थ–प्रदर्शक है। उसे सहानुभूतिपूर्ण ढंग से बालक के मस्तिष्क में स्थित ज्ञान का पथ–प्रदर्शन करना चाहिए।

मानवतावादी दर्शन–

स्वामी विवेकानन्द ने मानव धर्म को परिभाषित करते हुए कहा कि ईश्वर सम्बन्धी सभी सिद्धान्त सगुण, निर्गुण, अनन्त, नैतिक नियम अथवा आदर्श मानव धर्म की परिभाषा के अन्तर्गत आने चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मानव जीवन का प्रथम लक्ष्य ज्ञान तथा दूसरा लक्ष्य सुख है। सुख तथा ज्ञान मुक्ति की ओर ही ले जाते हैं परन्तु जब तक प्रत्येक प्राणी मुक्ति प्राप्त नहीं कर लेता तब तक कोई भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। जब तक सभी सुखी नहीं हो जाते कोई भी सुखी नहीं हो सकता। आत्म प्रतिष्ठान नहीं आत्म त्याग ही सर्वोच्च लोक का धर्म है। समस्या का हल निस्वार्थ भाव से ही हो सकता है। धर्म की उत्पत्ति प्रखर आत्म त्याग से ही हो सकती है। अपने लिए कुछ भी मत चाहो, सब दूसरों के लिए करो यही सच्चा मानव धर्म है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में–"धर्म का अर्थ न गिरजे में जाना है न ललाट रंगना है न विचित्र ढंग का वस्तु धारण करना है। इन्द्र धनुष के सब रंगों से तुम अपने को चाहे भले ही रंग लो किन्तु यदि तुम्हारा हृदय उन्मुक्त नहीं है यदि तुमने ईश्वन का साक्षात्कार नहीं किया तब यह सब व्यर्थ है जिसने हृदय को रंग लिया उसके लिए दूसरे रंग की आवश्यकता नहीं, यही धर्म का सच्चा अनुभव है।"

वास्तव में समाज को आर्थिक कल्याण और भौतिक सुख अवश्य ही प्रदान करने चाहिए परन्तु अन्तिम लक्ष्य आत्मा का विकास और पूर्णता है–चाहे उसके कुछ भी अर्थ हो, यह आत्मा ही मनुष्य के अन्तर्गत मानवता है। इसलिए मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य मानवता का साक्षात्कार है। उन्हीं के शब्दों में जीवों में मनुष्य ही सर्वोच्च जीव है और यह लोग ही सर्वोच्च लोक है। ईश्वर को मनुष्य की अपेक्षा बड़ा समझकर हम उसको कल्पना नहीं कर पाते, इसलिए हमारा ईश्वर भी मानव है और मानव ही ईश्वर है। स्वामी जी मानव सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म मानते हैं तथा उन्होंने दरिद्र नारायण की पूजा को ही सबसे बड़ी पूजा माना है। राष्ट्र सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्त्तव्य होना चाहिए।

शिक्षा का अर्थ–

स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त को व्यवहारिक रूप प्रदान किया वे मनुष्य को जन्म से पूर्ण मानते हैं और इसी पूर्णता की अभिव्यक्ति को वे शिक्षा कहते हैं। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ मनुष्य में निहित शक्तियों का पूर्ण विकास है न कि मात्र सूचनाओं का संग्रह। उनके अनुसार "यदि शिक्षा का अर्थ्ज्ञ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्व कोष ऋषि बन जाते।" उन्हीं के शब्दों में, "शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।" स्वामी जी का कहना है कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से सुखी नहीं होते, तब तक ज्ञान, भक्ति और योग ये सब कल्पना की वस्तु हैं। अतः केवल पुस्तकीय ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। शिक्षा का अर्थ ऐसे ज्ञान की प्राप्ति से है जिससे जीवन का निर्माण हो, मनुष्यत्व आये, चरित्र का गठन हो तन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य आत्मनिर्भर बने।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा में योगदान–

एक शिक्षा शास्त्री के रूप में स्वामी विवेकानन्द की प्रतिष्ठा बहुत अधिक व्यापक है। संक्षेप में भारतीय शिक्षा को उनकी देन का उल्लेख निम्न प्रकार किया जा सकता है।

- स्वामी जी ने वेदान्त को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने मानवता को बहुत ऊँचा स्थान दिया। उन्होंने कहा कि मानव सेवा से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है। उन्होंने मानव मं ही ईश्वर के दर्शन किये और मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा माना। उनके अनुसार शिक्षक को बालक में मानव सेवा की भावना का विकास करना चाहिए।
- स्वामी जी ने परमानुभूति की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल दिया। उन्होंन कहा जब तक भौतिक दृष्टि से सुखी नहीं होते तब तक ज्ञान, भक्ति और योग सब कल्पना की वस्तु है अतः शिक्षा इस प्रकार की हो जिससे व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सके।
- स्वामी जी द्वारा बताये गये शिक्षा के उद्देश्य वर्तमान परिस्थितियों में अत्यन्त उपयोगी है। वे बालक की उन्नति और विकास में योगदान दे सकते हैं।
- पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में स्वामी जी के विचार अत्यन्त व्यापक है। उन्होंने आत्म अनुभूति के लिए आध्यात्मिक और लौकिक उन्नति के लिए सभी विषयों पर बल दिया है।
- स्वामी जी ने बालकों के लिए प्राविधिक एवं औद्योगिक शिक्षा की व्यवस्था करने पर बल दिया है जिससे बालकों को रोजगार मिल सके।
- स्वामी जी संस्कृत को सर्वोत्तम भाषा मानते थे। उनका विश्वास था कि संस्कृत के द्वारा भारतीय गौरव, गरिमा के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है लेकिन वे संस्कृत के साथ–साथ अन्य भाषाओं के ज्ञान प्राप्त करने पर भी बल देते हैं।
- स्वामी जी ने शारीरिक शिक्षा पर विशेष बल दिया उनके अनुसार बालक को स्वस्थ और बलिष्ठ बनाना भी आवश्यक है जिससे बालक परिश्रम करने वाले अंगों से युक्त हो सके। इसके लिए उन्होंने पाठ्यक्रम में खेलकूद तथा व्यायाम की क्रियाओं को शामिल करन का सुझाव दिया।
- स्वामी जी न जन साधारण की शिक्षा सम्बन्धी विचार भारत की वर्तमान परिस्थितियों में अत्यन्त उपयोगी है। उन्हीं के शब्दां में "मेरे विचार से जन साधारण की अवहलना करना महान राष्ट्रीय पाप और हमारे पतन का कारण है। जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर अच्छी शिक्षा, अच्छा भोजन और अच्छी सुरक्षा प्रदान नहीं की जायेगी तब तक अधिक से अधिक राजनीति भी व्यर्थ होगी। वे हमारी शिक्षा के लिए धन देते हैं। हमारे मन्दिरों का निर्माण करते हैं पर इसके बदले में उन्हें मिलता क्या है मात्र ठोकरे। वे हमारे दासों के समान है यदि हम भारत का पुनरूत्थान करना चाहते हैं, तो हमें उनको शिक्षित करना होगा।"
- स्वामी जी स्त्रियों की शिक्षा के पक्षधर थे तथा देश के विकास क लिए उनके उत्थान पर बल देते थ। उन्हीं के शब्दों में "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो तब वे आपको बताये कि उनके लिए कौन से सुधार आवश्यक हैं। उनक मामलों में बोलन वाले तुम कान होते हो।"
- स्वामी जी ने धार्मिक शिक्षा का समर्थन किया है। यह धर्म को मनुष्य जीवन के शाश्वत मूल्यों के उद्घोषक के रूप मं स्वीकार करते थे। यह सभी धर्मों को बराबर महत्व देते थे। इन्हीं के शब्दों में "संसार के सब धर्म एक ही उद्देश्य की प्राप्ति के भिन्न–भिन्न मार्ग हैं।"

निष्कर्ष–

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन उपनिषदों पर आधारित है। वे आधुनिक शिक्षा प्रणाली के आलोचक थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया था कि पुस्तकीय शिक्षा उपयोगी है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति में वृद्धि हो, वृद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा विद्यमान है। सभी ज्ञान और शक्तियां मनुष्य के भीतर हैं। मनुष्य की आत्मा से ही सम्पूर्ण ज्ञान आता है। यह वहीं प्रगट कर पाता है जो अपने अंदर देखता है।

विद्यार्थियों के लिए स्वामी विवेकानंद ने अनेक महत्वपूर्ण सूत्र दिये है–"मन की एकाग्रता ही शिक्षा का यथार्थ सार है। प्रयोगशाला में वैज्ञानिक अपने मन की सभी शक्तियों को एकाग्र करके ही केन्द्र में स्थिर करता है। तत्वों पर लगता है उसे विश्लेषित करता है तब उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है। चाहे विद्वान् अध्यापक हो या मेधावी छात्र एवं अन्य कोई भी हो, यदि वह कोई ज्ञान चाहता है तो उसे नियमबद्ध होकर ही काम करना पड़ेगा। शिक्षा भौतिक प्रयोजन तो पूरा करती है। जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सुख, शांति का जीवन जीने के लिए व्यक्ति को ज्ञानवान, सदाचारी और कर्तव्य परायण भी होना चाहिए। यही वास्तविक विद्या है। ऋषियों ने विद्या और शिक्षा का दोनों काम अपने हाथों में लेकर सत्य और ज्ञान के सदुपयोग से लोगों के जीवन को ज्ञान और शांति के प्रकाश से आलोकित किया था।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. स्वामी दयानन्द : सत्यार्थ प्रकाश
2. सुरेश भटनागर : आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, लॉयल बुक डिपो, मेरठ
3. हुमांयू कबीर : शिक्षा का भारतीय दर्शन, बम्बई, एशिया पब्लिशिंग हाऊस
4. एस0 पी0 चौबे : शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाज शास्त्रीय आधार, प्रकाशक–इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ
5. डॉ0 रमाकान्त दुबे : विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री, प्रकाशक, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
6. राम शक्ल पाण्डेय : भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2
7. राम शक्ल पाण्डेय : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2
8. राम शक्ल पाण्डेय : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
9. विवेकानन्द : शिक्षा संस्कृति और समाज, प्रभात प्रकाशन, 205 चावड़ी बाजार, नई दिल्ली
10. रघुनाथ पाठक : आर्य समाज की उपलब्धियाँ
11. गिरीश पचौरी : शिक्षा सिद्धान्त, लॉयल बुक डिपो, मेरठ
12. गिरीश पचौरी : शिक्षा दर्शन, ओरियन्टल पब्लिशिंग हाऊस, परेड, कानपुर
13. एन0 आर0 स्वरूप सक्सेना : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, लायल बुक डिपो, मेरठ

14. रमन बिहारी लाल : शिक्षा सिद्धान्त, रस्तौगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ
15. सरयुप्रसाद चौबे : शिक्षा दर्शन, यूनिवर्सल पब्लिशर्स, 1003, आगरा
16. स्वामी विवेकानन्द : शिक्षा, श्री रामकृष्ण आश्रम, कलकत्ता
17. 29 अप्रैल 2003 : मेरठ हिन्दी समाचार पत्र, अमर उजाला
18. जॉन, एस0 ब्रूबेकर : मार्डन फिलासफी ऑफ एजूकेशन टाटा मेग्रो हिल पब्लिशिंग कम्पनी प्राईवेट लिमिटेड, बम्बई, नई दिल्ली
19. डॉ0 उर्मिला शर्मा : समकालीन भारतीय राजनैतिक चिन्तन में मानवतावाद शोध ग्रन्थ, प्रकाश विनीत पब्लिकेशन मेरठ